NCERT SOLUTIONS

CLASS - 9th

aglasem.com

Class : 9th

Subject : इतिहास

Chapter : 3

Chapter Name: नात्सीवाद और हिटलर का उदय

Q1 वाइमर गणराज्य के सामने क्या समस्याएं थी?

Answer- विश्व युद्ध के प्रारंभ में जर्मनी एक शक्तिशाली देश था, लेकिन अंत होते-होते जर्मनी को मित्र राष्ट्रों ने हरा दिया। उस समय जर्मनी में वाइमर का शासन था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद वाइमर गणराज्य के सामने अनेक समस्याएं खड़ी हो गई-

- ➔ सम्राट के पद त्याग के बाद मताधिकार से चुने जाने वाली लोकतांत्रिक संसद का प्रावधान किया गया, परंतु जर्मनी में ही काफी लोगों को यह बात पसंद नहीं आई।
- ➔ वर्साय की संधि से जर्मनी पर अनेकों पाबंदियां लगा दी गई जो पूरे देश के लिए अपमान का सबब बन चुकी थी।
- ➔ जर्मनी को अपने संसाधनों से भी हाथ धोना पड़ा। आम जनता इसके लिए भी राज्य को ही जिम्मेदार ठहरा रही थी।
- ➔ युद्ध के पहले वाला जर्मनी युद्ध के बाद कर्ज़दार बन गया था। प्रथम विश्व युद्ध का हर्जाना जर्मनी को चुकाना पड़ रहा था। वाइमर गणराज्य इस आर्थिक बोझ से परेशान हो चुका था।
- ➔ वाइमर गणराज्य के समर्थकों यथा समाजवादियों, कैथोलिक, डेमोक्रेट और लोकतंत्रवादियों को 'नवंबर के अपराधी' कहकर बुलाया जाने लगा।
- ➔ वाइमर गणराज्य राजनीतिक अस्थिरता से भी ग्रस्त था। इसकी वजह उन्हीं के संविधान के दो प्रावधान थे- पहला, 'आनुपातिक प्रतिनिधित्व' जिसके कारण किसी एक पार्टी को बहुमत मिलना नामुमकिन सा था और गठबंधन सरकारें ही बनती थी। दूसरा, अनुच्छेद 48, जिसमें राष्ट्रपति को आपातकाल लागू करने व अध्यादेशों के जरिए शासन चलाने का अधिकार दिया गया था।

इस प्रकार वाइमर गणराज्य समस्याओं से जूझ रहा था व लोकतांत्रिक होने के बाद भी लोगों की समस्याएं नहीं सुलझा पा रहा था।

Page : 74 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q2 इस बारे में चर्चा कीजिए कि 1930 तक आते-आते जर्मनी में नात्सीवाद को लोकप्रियता क्यों मिलने लगी?

Answer. नाजीवाद के उदय व लोकप्रिय होने के पीछे अनेक कारण थे, जिन्हें हम इस प्रकार समझ सकते हैं-

असमर्थ वाइमर गणराज्य- यह जर्मनी को प्रथम विश्व युद्ध से उबारने में असफल रहा। जर्मनियों का अपनी सरकार पर से भरोसा उठ चुका था, उन्हें किसी ऐसे विकल्प की खोज थी जो उन्हें उनका खोया हुआ सामान वापस दिलवा सके।

हिटलर का उदय- ऑस्ट्रिया में जन्मा यह व्यक्ति जर्मनी की हार व हुए अपमान से आग बबूला हो चुका था। वह हर हाल में जर्मनी को ताकतवर बनाना चाहता था। 1919 में उसने जर्मन वर्कर्स पार्टी की सदस्यता ली, जो आगे चलकर नात्सी पार्टी कहलायी। वह अपनी वक्ता शैली से सभी को आकर्षित करता था। धीरे-धीरे लोगों का विश्वास उसमें बढ़ता गया।

1929 की महामंदी- इस मंदी ने लोगों को नात्सियों की तरफ आकर्षित किया। इस समय नात्सीवाद एक जन आंदोलन बन गया। यह लोगों को एक अच्छा भविष्य दिखाई देने लगा।

राजनीतिक फेरबदल - 1933 तक हिटलर को राष्ट्रपति ने चांसलर बना दिया। हिटलर ने रुढ़िवादियों को भी अपने साथ कर लिया था। अब लोकतांत्रिक संगठनों व प्रणाली को समाप्त किया जाने लगा, कम्युनिस्टों को मौत के घाट उतार दिया गया।

इस प्रकार एक राष्ट्र की कल्पना व गौरवपूर्ण जर्मनी के सपने ने नात्सीवाद को काफी लोकप्रिय बना दिया था।

Page : 74 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q3 नात्सी सोच के खास पहलू कौन से थे?

Answer- नात्सीवाद एक संपूर्ण व्यवस्था, विचारों की एक पूरी संरचना का नाम है। नात्सी सोच ने जर्मनी को सुनहरे सपने दिखाए पर उसके लिए स्वयं जर्मन वासियों को ही भारी कीमत चुकानी पड़ी। नात्सी सोच की विशेष पहलू इस प्रकार थे-

सभी समान नहीं होते- नात्सी लोग 'नॉर्डिक जर्मन आर्य' व प्रतिभाशाली लोगों को ही सर्वश्रेष्ठ समझते थे। इसके विपरीत सभी अवांछित लोग थे, जिन्हें मार देना ही बेहतर समझा जाता था।

चार्ल्स डार्विन व हर्बर्ट स्पेंसर का प्रभाव- अपनी गलत सोच को वह इन विचारकों के सिद्धांतों से जोड़कर प्रमाणिक दिखाने की कोशिश करते थे, उनके हिसाब से क्योंकि स्पेंसर ने कहा है कि 'जो सबसे योग्य है वही जीवित बचेगा', इसलिए यहूदियों व अवांछितों का मरना ही तर्कसंगत है।

'लेबेन्नत्राउम' या जीवन परिधि की भू राजनीतिक अवधारणा- हिटलर यह मानता था कि साम्राज्य का प्रसार जरूरी है ताकि जर्मनी के लोगों को रहने की जगह कम ना पड़े। इससे एक तरफ देश का क्षेत्रफल बढ़ेगा और दूसरी तरफ देश ताकतवर भी बनेगा।

नात्सी लोग यह सोचते थे कि सिर्फ वही श्रेष्ठ हैं। समूचे विश्व को उन्हीं की तरह होना चाहिए अर्थात विविधता से परे नात्सी सोच एकरूपता की पैरवी करती थी।

उपरोक्त पहलुओं को देखकर यही लगता है कि इस तरह की सोच में भले ही प्रारंभ में हानि न पहुंचाई, पर आगे जाकर तानाशाही रवैये का पर्याय बन गई।

Page : 74 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q4 नात्सियों का प्रोपेगेंडा यहूदियों के खिलाफ नफरत पैदा करने में इतना असरदार कैसे रहा?

Answer. जैसा कि हम जानते हैं, जर्मनी में हिटलर के समय यहूदियों के साथ बुरे से बुरा व्यवहार किया गया। एक तरह का नरसंहार संपूर्ण विश्व ने देखा, पर इस प्रोपेगेंडा के असरदार होने के पीछे कुछ कारण थे-

राजनीतिक स्वीकृति- ऐसा नहीं था कि यहूदियों के खिलाफ नफरत को एक संगठन फैला रहा था, अपितु स्वयं देश की सरकार का यह एक एजेंडा था।

धार्मिक स्वीकृति- सभी ईसाई, यहूदियों को ईसा मसीह के कातिल की तरह ही देखते थे, क्योंकि ईसाइयों का आरोप था कि यहूदियों ने ही ईसा मसीह को मारा था। ईसाई उन्हें हत्यारे और सूदखोर समझते थे।

आर्थिक स्वीकृति- यहूदियों को पैसे के भूखे समझा जाता था। वह ब्याज वसूलते थे और उधार देने का कारोबार करके जीविका चलाते थे। नात्सियों को यह पसंद नहीं था।

सामाजिक स्वीकृति- हिटलर ने यह बात पूरी जर्मन समाज में घर करा दी थी कि यहूदी अच्छी नस्ल के नहीं है, वे आर्यों के लिए खतरा हैं, इसलिए समाज से उनका खात्मा आवश्यक है।

अतः सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक स्वीकृतियों ने नात्सी प्रोपेगेंडा को यहूदियों के खिलाफ नफरत फैलाने में इतना असरदार बनाया।

Page : 74 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

aglasem.com

Q5 नात्सी समाज में औरतों की क्या भूमिका थी? फ्रांसीसी क्रांति के बारे में जानने के लिए अध्याय 1 देखें। फ्रांसीसी क्रांति और नात्सी शासन में औरतों की भूमिका के बीच क्या फर्क था, एक पैराग्राफ में बताएं।

Answer. हिटलर ने जर्मनी में पितृसत्तात्मक समाज बनाने पर बल दिया। नात्सी विचारधारा में महिलाओं को पुरुषों से कम माना गया। उन्हें हमेशा भोग की वस्तु के रूप में समझा गया। हिटलर ने महिलाओं का काम केवल बच्चे पैदा करने तक ही सीमित कर दिया था।

यदि हम 1940 के जर्मनी की तुलना 1780-90 के फ्रांस से करें तो पाएंगे कि दोनों देशों में महिलाओं की स्थिति में जमीन आसमान का अंतर था। जहां एक और फ्रांस में महिलाओं ने लुईस 16वें का तख्तापलट कर दिया था; विश्वविद्यालय में रोजगार हेतु शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास किया; मताधिकार के लिए संघर्ष किया, वहीं दूसरी ओर जर्मनी में महिलाएं कभी भी पुरुषों के समकक्ष नहीं मानी गई। हिटलर ने नात्सीवाद के जरिए पूरे समाज में यही सोच बना दी थी कि महिलाएं - पुरुषों में समानता का संघर्ष बेकार की बात है। महिलाओं का दायित्व हमेशा अच्छे, गोरे, प्रतिभाशाली आर्य बच्चे पैदा करना है। उल्टा जर्मनी में ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने वाली महिलाओं को पुरस्कृत किया जाता था।

इस प्रकार फ्रांसीसी क्रांति में जहां अबला नारी की कल्पना साकार होती है वहीं नात्सी शासन में वही नारी अबला प्रतीत होती है।

Page : 74 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q6 नात्सियों ने जनता पर पूरा नियंत्रण हासिल करने के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाएं?

Answer- प्रथम विश्व युद्ध के समापन से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध के समापन तक जर्मनी में नात्सीवाद चरम सीमा पर रहा। इस दौरान उन्होंने जर्मनी के समाज और उसकी जनता पर निम्नलिखित तरीकों से नियंत्रण हासिल किया-

<u>एक उच्चतम देश की कल्पना</u>- हिटलर ने जर्मनी के लोगों को इतना आकर्षक सपना दिखाया कि जनता उस सपने को पूरा करने के लिए नरसंहार तक करने को तैयार हो गई।

<u>युवाओं व बच्चों पर विशेष ध्यान</u>- अच्छे जर्मन बच्चों को नात्सी शिक्षा प्रणाली से गुजरना पड़ता था। बच्चों को सिखाया जाता था कि वह यहूदियों से नफरत और हिटलर की पूजा करें। 10 साल के बच्चों को यूंगफोक में भर्ती कराया जाता था। 1922 में बनी नात्सी यूथ लीग में लाखों युवा शामिल हुए।

<u>पितृसत्तात्मक समाज</u>- पुरुषों को महिलाओं से श्रेष्ठ माना गया। उन्हें हमेशा बच्चा पैदा करने वाली वस्तु के रूप में देखा जाता था।

aglasem.com

प्रचार के तरीके- अप्रत्यक्ष रूप से शब्दों का प्रयोग होता था, यथा 'सामूहिक हत्या' को 'अंतिम समाधान' कहा जाता था। नात्सी विचारों को फैलाने के लिए तस्वीरों, फिल्मों, रेडियो, आकर्षक पोस्टरों और नारों का सहारा लिया जाता था।

अन्य विचारधाराओं को कमतर बताना- समाजवादियों, उदारवादियों को कमजोर व भ्रष्ट बताया जाता था। उन्हें विदेशी एजेंट कहा जाता था।

इस प्रकार उपरोक्त तरीकों से धीरे-धीरे नात्सी विचार पूरी जर्मनी में फैल गए। हालांकि कुछ जर्मन-वासियों ने विरोध भी किया पर वह खुले रूप से कुछ करने से हमेशा बचते रहे, जिसके चलते हिटलर तानाशाह की तरह जर्मनी पर शासन कर सका।

Page : 74 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

aglasem.com